औरतों की बीमारी / चन्द्रकांता

महीने भर से ज्वर था, दाँत कि-ट-कि-टा-ते
पूरा आषाढ़ निकल गया शरीर को जुड़ाते
खसम गया था दिल्ली कमाने दो आने
ब्याह में जो लिया था कर्ज चुकाने
लक्ष्मी को थी भावज
भगिनी सी प्यारी
देखकर उसकी पीली देह पर
लाल गुलाबी चकते
जाकर खबर दी माँ को, आहिस्ते.

अम्मा नें सुनकर बहू की बीमारी
आँखें तरेरीं दोनों बारी-बारी –
'रामचंदर की बहू तो कभी बीमार नहीं होती!'
अम्मा ! दस रोज से बदन तप रहा रामप्यारी का
खाँसते-खाँसते बलगम से
बुरा हाल था बेचारी का, कहती थी –
'तकादा करूंगी तो लांछन लगेगा कामचोर है'
रामचंदर की बहू को शायद तपेदिक का जोर है
साल भर पहले ही तो चल बसी थी उसकी महतारी.

लो ! हमें तो ना होती थी बीमारी
ये आजकल की बहुएँ 'फैशन की मारी'
दो बरतन क्या घिस लेती हैं
पड़ जाती हैं खाट पर
आग लगे, इन करमजलियों के ठाठ पर
हम तो घास काटते थे, करते थे सानी
कोस भर दूर से ढोकर लाते थे पानी
चूल्हा-चौका करके गोबर लीपते थे
संध्या चढ़ने से पहले हल्दी-मिरच पीसते थे .

ओखली में जब मुख देता था अंधेरा
हमारे लिए होता था वह दूजा सवेरा
थके मांदे तेरे बापू घर आते थे
पहले तेंदू पत्ता घिसते
फिर महुआ चढ़ाकर बैठ जाते थे
और हम चूल्हे पर सालन रखकर
झूलती आँखों से अपनी थकान मिटाते थे
अब तो इन बहुओं से आराम भी नहीं होता
बैठे ठाले दे रही हैं बीमारियों को न्यौता .

अजी सुनते हो ! लक्ष्मी के बापू
देखो तो क्या कहती है बिटिया तुम्हारी
बहू को लग गयी है कोई हवा-बीमारी
कहो तो वैद्य बुलवा दूँ !
फाँककर तंबाकू का गोला
बापू ने मुंह खोला –
क्या दिमाग से पैदल है जनकदुलारी
अभी हाथ थोड़ा कड़क है
झाड़-फूँक करवा देंगे जब आएगी बारी .

और लक्ष्मी तू बड़ी मास्टरनी लगी है !
दो किताब क्या पढ़ ली
गज भर की जबान खींचकर
हमारे सर पर चढ़ी है
कमबख्त ! औरतें तो ऐसे ही ठीक हो जाती हैं
चक्की में गेहूं पीसते-पिसाते
चूल्हे की आग में खटते-खटाते
फिर अब तो 'उज्ज्वला' भी है
पहले की तरह धुएँ में नहीं रगड़नी पड़ती आँतें .

खुजलाते हुए माथा बापू बोला –
भई, सच कह गए हैं बड़े बुजुर्ग
तुम लुगाइयों को खूब आता है
बात का बतंगड़ करना
राई को पहाड़ बनाना
बात-बात पर बिस्तर पकड़ लेना
फिर राशन पानी लेकर सर पर बैठ जाना
भला बुखार भी कोई बीमारी होती है
औरतों की भी कोई दवा-दारू होती है !

यह सप्ताह / हमारी जिंदगी में दोस्त

कोलंबा कालीधर

दोस्तों, अगर हमारी जिंदगी से दोस्त निकाल दिए जाएं तो जिंदगी कैसी रह जायेगी ? इतनी नीरस कि कल्पना करना भी मुश्किल है!

हम बाकी सभी रिश्तों के साथ पैदा होते हैं पर दोस्ती ही एक मात्र रिश्ता है जिसे हम खुद बनाते हैं. सचमुच, फ्रेंड्स के बिना लाइफ के बारे में सोचना भी असंभव है. मित्र वो होता है जो आपको जाने और आपको उसी रूप में चाहे.

व्यवसाय पर आधारित दोस्ती, दोस्ती पे आधारित व्यवसाय से बेहतर है.

एक सच्चा दोस्त कभी आपके रास्ते में नहीं आता जब तक कि आप गलत रास्ते पर ना जा रहे हों.

किसी जंगली जानवर की अपेक्षा एक कपटी और दुष्ट मित्र से ज्यादा डरना चाहिए, जानवर तो बस आपके शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है, पर एक बुरा मित्र आपकी बुद्धि को चोटिल कर सकता है.

सभी के साथ विनम्र रहिये, पर कुछ के साथ ही घनिष्ठता बनाइये, और इन कुछ को भी पूर्ण विश्वास करने से पहले अच्छी तरह से जांच लीजिये.

मित्रता दो शरीरों में रहने वाली एक आत्मा है.

मेरे पीछे मत चलो, हो सकता है मैं नेतृत्व ना कर पाऊं. मेरे आगे मत चलो हो सकता है मैं अनुगमन ना कर सकूँ. बस मेरे साथ चलो मेरे मित्र बनकर. दोस्त और शिष्टाचार आपको वहां ले जायेंगे जहाँ दौलत नहीं ले जा पायेगी.

दोस्ती किसी दिन की मोहताज नही जो उसे किसी एक दिन ही जाहिर किया जाए। सच्चे दोस्त तो हमेशा ही हर समय ही दोस्ती जाहिर करते रहते है, यह हमारी जिंदगी में ईश्वर की तरफ से सबसे अनमोल तोहफा होते है। भले ही दोस्तो के साथ हमारा कोई रिश्ता न हो, लेकिन फिर भी वक्त आने पर यह दोस्ती का रिश्ता ही हमारा साथ निभाता है। जब अपने भी साथ छोड़ जाते है तो सच्चा दोस्त ही साथ निभाता है और तब तक साथ रहता है जब तक कि वह बुरा समय न चला जाए क्योंकि अक्सर सच्चे दोस्त बुरे वक्त में ही हमारे साथ रहते है, भले ही खुशी के मौके पर वह हमेशा कहते रहे कि "मेरे पास समय नहीं।"

सच्चे दोस्तों को हमारी सफलता से ,हमारी खुशी से खुशी तो मिलती है,लेकिन हर समय वह हमारे साथ नही रह सकते होते, लेकिन जब वह अपने मित्र को किसी मुसीबत में देखे तो बिना समय गंवाए हमारी मदद करने को आतुर हो जाते हैं।

कैसी अजीब होती है न यह दोस्ती ? कोई रिश्ता न होकर भी सबसे करीबी रिश्ता। दोस्तो के लिए तो हर दिन ही दोस्ती दिवस ही है और जो करीबी दोस्त हो, उनके लिए तो यह दिन कुछ भी नही। दोस्त ही ऐसा होता है जो हमें सबसे अधिक तंग भी करता है, लेकिन समय आने पर अगर कोई और हमे तंग करे तो हमारा सबसे बढ़कर साथ भी वही देता है।

राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिकता

हिमांशु कुमार

पिछले दिनों मुझे युवा लड़के लड़कियों के एक प्रशिक्षण शिविर में बुलाया गया . मुझे राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिकता पर बोलने के लिए कहा गया.

मैंने वहाँ मौजूद ग्रामीण शिक्षित युवाओं से पूछा कि बताइये कि दुनिया का सबसे अच्छा राष्ट्र कौन सा है ? सबने एक स्वर में कहा कि भारत.

मैंने अगला सवाल पूछा कि अच्छा बताओ कि सबसे अच्छा धर्म कौन सा है ? सबने कहा हिंदू धर्म.

मैंने पूछा कि अच्छा बताओ सबसे अच्छी भाषा कौन सी है ? कुछ ने जवाब दिया कि हिन्दी, कुछ युवाओं ने जवाब दिया कि संस्कृत सर्वश्रेष्ठ भाषा है .

मैंने उन युवाओं से अच्छा अब बताओ कि दुनिया का सबसे बुरा देश कौन सा है ? सारे युवाओं ने कहा, पाकिस्तान, मैंने पूछा सबसे बेकार धर्म कौन सा है ? उन्होंने कहा इस्लाम ?

मैंने इन युवाओं से पूछा कि क्या उन्होंने जन्म लेने के लिए अपने माँ बाप का खुद चुने थे ? सबने कहा नहीं .

मैंने पूछा कि क्या आपने जन्म के लिए भारत को या हिंदू धर्म को खुद चुना चुना था ? सबने कहा नहीं .

मैंने कहा यानि आपका इस देश में या इस धर्म में या इस भाषा में जन्म महज़ एक इत्तिफाक है . सबने कहा हाँ ये तो सच है .

मैंने अगला सवाल किया कि क्या आपका जन्म पाकिस्तान में किसी मुसलमान के घर में होता और मैं आपसे यही वाले सवाल पूछता तो आप क्या जवाब देते ?

क्या आप तब भी हिंदू धर्म को सबसे अच्छा बताते ? सभी युवाओं ने कहा नहीं इस्लाम को सबसे अच्छा बताते .

मैंने पूछा अगर पाकिस्तान में आपका जन्म होता और तब मैं आपसे पूछता कि सबसे अच्छा देश कौन सा है तब भी क्या आप भारत को सबसे अच्छा राष्ट्र कहते ? सबने कहा नहीं तब तो हम पाकिस्तान को सबसे अच्छा देश कहते .

मैंने कहा इसका मतलब यह है कि हम ने जहां जन्म लिया है हम उसी धर्म और उसी देश को सबसे अच्छा मानते हैं. लेकिन ज़रूरी नहीं है की वह असल में ही वो सबसे अच्छा हो. सबने कहा हाँ ये तो सच है.

मैंने कहा तो अब हमारा फ़र्ज़ यह है कि हम ने जहां जन्म लिया है उस देश में और उस धर्म में जो बुराइयां हैं उन्हें खोजें और उन् बुराइयों को ठीक करने का काम

करें . सभी युवाओं ने कहा हाँ ये तो ठीक बात है .

इसके बाद मैंने उन्हें संघ द्वारा देश भर में फैलाए गए साम्प्रदायिक ज़हर और उसकी आड़ में भारत की सत्ता पर कब्ज़ा करने और फिर भारत के संसाधनों को अमीर उद्योगपतियों को सौपने की उनकी राजनीति के बारे में समझाया .

मैंने उन्हें राष्ट्रवाद के नाम पर भारत में अपने ही देशवासियों पर किये जा रहे अत्याचारों के बारे में बताया. मैंने उन्हें आदिवासियों, पूर्वोत्तर के नागरिकों, कश्मीरियों पर किये जाने वाले हमारे अपने ही अत्याचारों के बारे में बताया.

मैंने उन्हें हिटलर द्वारा श्रेष्ठ नस्ल और राष्ट्रवाद के नाम पर किये गये लाखों कत्लों के बारे में बताया. मैंने उन्हें यह भी बताया की किस तरह से संघ उस हत्यारे हिटलर को अपना आदर्श मानता है .

मैंने उन्हें बताया की असल में हमारी राजनीति का लक्ष्य सबको न्याय और समता हासिल करवाना होना चाहिए. हमने भारत के संविधान की भी चर्चा करी .

लेकिन इस प्रशिक्षण के बाद वे मेरे पास आये और उन्होंने कहा कि आज आपकी बातें सुनने के बाद हमारी आँखें खुल गयी हैं.

असल हमें इस तरह से सोचने के लिए ना तो हमारे घर में सिखाया गया था ना ही हमारे स्कूल या कालेज में इस तरह की बातें बताई गयी थीं.

9 अगस्त 1925 के दिन आजादी की लड़ाई की सबसे रोमांचक घटनाओं में से एक काकोरी काण्ड घटित हुआ था। जिसे अंजाम देने वाले चार बड़े क्रांतिकारियों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक़ उल्ला खान, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी को फांसी पर चढ़ा दिया गया था और 13 अन्य की विभिन्न अवधि की सजा, काले पानी/ अंडमान जेल और देश निकाले की सजा हुई थी.काकोरी कांड के सभी क्रांतिकारियों को नमन व विनम्र श्रद्धांजलि.